Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

पर्यावरण संरक्षण और मीडिया में सहसंबंध

धरवेश कठेरिया[1] , धीरेद्र पाठक[2] , प्रणव मिश्र[3] , हिमानी सिंह[4] , पदमा वर्मा[5] , नीतिका अम्बष्ठा[6]

[1]सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2]एसोसिट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश।

[3]पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[4.5.6.] एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

सारांशः

पर्यावरण संरक्षण एक चिरकालीन बहस रही है, लोग सदियों से इसके संरक्षण की बात करते आ रहे हैं। जिसके कुछ उदाहरण हमें हिंदू धर्म में पेड़ों की पूजा के रूप में देखने को मिलता है जिससे यह बात सिद्ध होती है कि हमारे पूर्वज पर्यावरण को कितना महत्व देते थे। परंतु आज पर्यावरण संतुलन बिगड़ता ही जा रहा है। मनुष्य सदा से पर्यावरण पर आश्रित रहा है। अपनी जरूरतों की समस्त वस्तुएं वह पर्यावरण से ही लेता आ रहा है लेकिन यह जरूरत आज दोहन बन गई है। दोहन की भी एक सीमा होती है, जब दोहन हद से ज्यादा हो गया तो प्रकृति ने इसके परिणाम हमें सुनामी, ओजोन परत में छेद, केदारनाथ त्रासदी, नेपाल त्रासदी आदि के रूप में देखने को मिलते है।

पर्यावरण मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। इसका संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। आज पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मीडिया का यह दायित्व है कि वह अपने साधनों के द्वारा जनहित को ध्यान में रखते हुए इसके संरक्षण से होने वाले लाभ के बारे में बताए और इसके क्षरण से होने वाली हानियों से अवगत कराए। यह मीडिया का एक नैतिक कर्तव्य होना चाहिए। मीडिया को चाहिए की विश्वस्तर पर पर्यावरण संरक्षण को लेकर होने वाली बैठकों, चर्चाओं–परिचर्चाओं को प्रचारित और प्रसारित करे जिससे समाज पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरुक हो सके। पिछले कुछ दशकों में मीडिया समाज में जागरुकता फैलाने का एक प्रमुख

साधन बनकर उभरा है। यह समाज को तरह–तरह से और समय–समय पर जागरुक कर उसके लिए काम करता है। मीडिया यह दावा करता है वह समाज के लिए है। मीडिया पर्यावरण के संरक्षण को लेकर जागरुक है लेकिन यह जिम्मेदारी उसे और गंभीरता के साथ निभानी होगी। समय–समय पर यह इसके संरक्षण के लिए लेखों और समाचारों को जगह देता नजर आता है।

शब्द कुंजीः तापमान, पर्यावरण, औद्योगीकीकरण, यूनेस्को, हारवेस्टिंग, पर्यावरण, जलवायु, बदलाव, ग्लोबल वार्मिंग, नागपुर, मीडिया।

उद्देश्यः

पर्यावरण संरक्षण किसी एक व्यक्ति, समूह, वर्ग, देश का नहीं बल्कि पूरे संसार का सबसे ज्वलंत मुद्दा है। आज दुनिया में इस विषय पर सबसे ज्यादा बहस और चर्चा हो रही है और कयास लगाए जा रहें हैं कि यदि निकट भविष्य में हम पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुक नहीं हुए तो मनुष्य जाति के अस्तित्व पर खतरा हो सकता है। ऐसे में पर्यावरण जागरुकता के लिए सबसे उपयुक्त माध्यम है मीडिया। आज मीडिया की पहुंच दुनिया के लगभग जनमानस तक है। 21वीं सदी में शायद ही कोई व्यक्ति हो जो इसकी जद में न हो।

पर्यावरण संरक्षण और मीडिया में सहसबंध विषय को निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चुना गया–

- शोध के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका का पता लगाया गया।
- पर्यावरण की वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
- प्रदूषण के बढ़ते स्तर से होने वाले नुकसान को रेखांकित करना।
- मीडिया पर्यावरण जागरुकता संबंधी खबरों को कितना महत्व देता है? का अध्ययन करना।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध विषय 'पर्यावरण संरक्षण और मीडिया में सहसंबंध में शोध को ध्यान में रखते हुए तथ्यों के विश्लेषण हेतु अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है जिसके माध्यम से तथ्यों और आंकड़ों को एकत्रित करने का प्रयास किया गया है। तथ्य एकत्रित करने के लिए विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, वेबसाईटों और समाचारपत्रों का सहयोग लिया गया है।

प्रस्तावनाः

पर्यावरण में हो रहे बदलाव और औद्योगीकीकरण से प्रदूषण और तापमान में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। पिछले एक दशक से इसमें तेजी से बदलाव देखने को मिल रहा है। देश के कई हिस्सों का तापमान गर्मी के समय में 50 डिग्री से उपर चला जाता है। सामान्यतः हर शहर का तापमान 4 से 5 डिग्री तक बढ़ जाता है। आज विकास का मॉडल कच्चे घर और आंगन में छायादार ऑक्सीजन देने वाले पेड़ों से उठकर कंक्रीट और आसपास बड़े–बड़े गमलों में हरे भरे छोटे केवल दिखावटी पेड़ पौधों में बदल गया है। जंगल का शेर अब शहरों की ओर रुख करने लगा है। दादा–दादी और नाना–नानी की कहानियों से हरे–भरे जंगल और जंगल के जानवर गायब हैं और उनकी जगह डोरेमॉन और छोटे भीम ने ले ली है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित विश्व पर्यावरण दिवस वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए मनाया जाता है। 1972 में यूनेस्को ने 05 जून, को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की घोषणा के एक साल बाद 5 जून, 1973 ई. को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। इसके साथ एक बड़ी आस पर्यावरण संरक्षण को लेकर दिखी और यह कुछ देशों के संदर्भ में कारगर भी सिद्ध हुई लेकिन भारत के संदर्भ में यह दिन कागजी शेर

ही साबित हुआ। पांच जून का उत्सव केवल समाचारों की सुर्खियों में देखने को मिलता है। अनेक पेड़ लगाए जाते हैं, कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं लेकिन सच तो यह है कि इनमें से अधिकतर पेड़ देखभाल के अभाव में सूख जाते हैं। देश में ऐसे अनेकों संस्थान हैं जो हर साल पर्यावरण उत्सव मनाते हैं लेकिन वे आज भी हरियाली से कोसों दूर हैं। पर्यावरण संरक्षण को लेकर आम आदमी की सजगता तो दूर की बात है, सरकार अपने संस्थानों तक को इसका पालन कराने में असमर्थ दिखती है। लगभग नए बन रहे सरकारी भवनों में आज भी पर्यावरण संरक्षण– वाटर हारवेस्टिंग, वाटर ट्रिटमेंट प्लांट, सोलर एनर्जी एवं वृक्षारोपण आदि का नियमन नहीं हो पा रहा है। ऐसे में आम आदमी से क्या उम्मीद की जाए?

इसी प्रकार देश में बहुत–सी ऐसी गैर सरकारी संस्थाएं संचालित हैं जो पर्यावरण तथा पौधा रोपण के नाम पर सरकारी वित्तीय सहायता का दुरुपयोग कर रही हैं। ऐसा नहीं है कि सारी संस्थाएं एक ही रंग में रंगी हुई हैं परंतु जमीनी स्तर पर कार्य करने वालों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। जो संस्थाएं पौधा रोपण जैसे नेक काम में अपना सहयोग दे भी रही हैं तो वे पौधों को रोपने तक ही अपने दायित्वों को सीमित किए हुए हैं। उसकी सिंचाई, निराई, कीटाणुओं से उनकी रक्षा आदि कार्यों से ज्यादातर संस्थाओं का कोई सरोकार नहीं है। अंग्रेजी अखबार में छपे खबरों के विश्लेषण के अनुसार वर्ष 2012 से 15 के मध्य नागपुर नगर निगम द्वारा पौधा रोपण में 26.36 लाख रुपए की धनराशि खर्च की गई। परंतु रोपित पौधों में से मात्र 34 प्रतिशत पौधे ही जीवित बच पाए। शेष 66 प्रतिशत सरकारी तथा गैर सरकारी तंत्रों की लापरवाही की भेंट चढ़ गए। साथ ही नागपुर नगर निगम द्वारा वितरित पौधों का कोई रिकॉर्ड भी नहीं रखा गया।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता:

वर्तमान में पृथ्वी पर मौजूद प्रत्येक जीव विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों के अनसुलझे जाल के बीच किसी प्रकार सांस ले रहा है। पर्यावरण, जलवायु बदलाव, ग्लोबल वार्मिंग के बिगड़ते गणित हमें भविष्य में आनेवाले खतरे की चेतावनी दे रहे हैं। हम जानबुझकर आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य पर्यावरण रहित टिकाऊ विकास की भेंट चढ़ा रहे हैं। हम सब साक्षी हैं कि कुछ महीनों पूर्व दिल्ली में दूषित वायु के कारण कैसा हाहाकार मचा था। क्या हम वाकई चाहते हैं कि हमारे बच्चे भी चेहरे पर मास्क लगाकर अपनी दिनचर्या का आरंभ करें? मास्क तो फिर भी धूल से उनकी रक्षा करेगा लेकिन तब क्या होगा जब वृक्ष रहित इस भूमि पर ऑक्सीजन का अभाव होने लगेगा। मौजूदा आंकड़ों के हिसाब से औसतन प्रति व्यक्ति द्वारा श्वसन हेतु औसतन प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति द्वारा 550 लीटर ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।

नॉर्थ वेस्ट टेरीटोरीन फोरेस्ट मैंनेजमेंट के द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार औसतन एक वयस्क वृक्ष प्रतिवर्ष 260 पाउंड ऑक्सीजन उत्पन्न करता है। दो वृक्ष चार सदस्यों वाले एक परिवार के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इसी प्रकार एक एकड़ में रोपित वृक्ष 18 लोगों के वर्ष भर के लिए जरुरी ऑक्सीजन की आपूर्ति करते हैं। अगर गणना की जाए तो पृथ्वी पर मौजूद 6 विलियन मनुष्यों की ऑक्सीजन की आपूर्ति के लिए कितने वृक्षों की आवश्यकता होगी, ये गणना कर हम परेशान हो जाएंगे। 36, 794, 240, 000 एकड़ में विस्तारित पृथ्वी का नौ ट्रीलियन हिस्सा यानी 71 प्रतिशत विभिन्न जलादियों द्वारा काबिज है। इसके अलावा पृथ्वी पर बची हुई 29 प्रतिशत भूमि पर भी कई जगह ऐसी है जहां वृक्षा रोपण संभव नहीं है। जैसे उंची पर्वत श्रृंखलाएं, दलदली बंजर भूमि, उत्तरीय व दक्षिणीय ध्रुवीय क्षेत्र, मरूस्थल आदि। अब गणना कीजिए हमारे पास कितनी भूमि शेष बची जहां वृक्ष रोपित किए जा सकें। क्या हमारे पास इतने वन या वृक्ष शेष हैं जिससे 6 विलियन पृथ्वी वासियों के लिए प्राणदायी वायु ऑक्सीजन का इंतजाम हो सके। विश्व में वृक्षों की 23000 से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं तथा वृक्ष मात्र ऑक्सीजन उत्पन्न करने का कार्य नहीं करते, इसके अलावा भी बहुत सी जीवन के लिए उपयोगी प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एक वृक्ष पूरे वर्ष में 48 पाउंड कार्बनडाई ऑक्साईड शोषित करता है। तथा जब तक वह 40 वर्ष की आयु को प्राप्त करता है तब तक वह लगभग एक टन तक CO ग्रहण कर चुका होता है। इसके अलावा एक वयस्क वृक्ष रोज लगभग 100 गैलन$_2$ भूमिगत जल शोषित कर वातावरण में छोड़ता है।

मानव जीवन के इतने महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद वन संपूर्ण विश्व में उपलब्ध अनुकूल भूमि के मात्र 30 प्रतिशत हिस्से में किसी प्रकार अपना अस्तित्व बचाए हुए हैं। तथ्यात्मक सत्य तो यह है कि समुद्रों तथा अन्य जल स्त्रोतों में उपस्थित फाईटो पिलाकटूनस जैसे सायनो बैक्टिरिया ग्रीन एल्गी (शैवाल) तथा डायटम्स हमारे वायुमंडल को ऑक्सीजन प्रदान न करे, जो कि कुल उपलब्ध ऑक्सीजन का 70 से 80 प्रतिशत हिस्सा है, तो डायनासोर की भांति हमारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। मौजूदा परिस्थितियों में विकल्पों पर अधिक चिंतन करने की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों तथा विकास के मध्य बेहतर तालमेल ही हमारे अस्तित्व को बचाए रखने का एक मात्र विकल्प है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव:

भारत में प्राचीन काल से ही प्रकृति को माता का दर्जा दिया गया है। यहां हर वृक्ष को किसी न किसी देवी–देवता से जोड़कर उनकी पूजा की जाती है। तुलसी, नीम, पीपल, बरगद, आंवला इसके उदाहरण हैं। परंतु आज विकास की अंधी दौड़ ने हमें गूंगा, बहरा और अपाहिज बना दिया है। जो अपनी प्रकृति माता के लगातार हो रहे शोषण के खिलाफ कोई कदम उठाने में असमर्थ है। जहरीली वायु, जहरीला पानी, जहरीली खाद युक्त मिट्टी से उपजे भोजन कब तक हमारी सभ्यता को जीवित रहने देंगे। यह पर्यावरण के प्रति हमारे रुखे तथा असम्मान पूर्ण व्यवहार और तथाकथित विकास के प्रति बढ़ती आस्था ही है जिसने पर्यावरण को इतनी हानि पहुंचाई है। शहर मात्र कंक्रीट के जंगल हो गए हैं, जहां हरियाली पार्कों तक ही सीमित है। रही–सही कसर ग्रामीणों के शहरों की ओर पलायन ने पूरी कर दी है। शहर में जल तथा हरियाली की सीमित उपलब्धता की तकलीफ को पलायन ने कई गुना बढ़ा दिया है। शहरों में रहने के लिए जमीन की कमी, पीने को पानी तथा स्वास्थ्य एवं श्वसन हेतु शुद्ध वायु तथा हरियाली की अनुपलब्धता भी पलायन करते ग्रामीणों की इच्छा शक्ति को क्षीण नहीं कर पाई। परिणाम– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, औद्योगिक प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, विकरणीय प्रदूषण के रूप में हमारे सामने है। विकास के साथ आज हमें प्रकृति से भी सहसंबंध बनाने की आवश्यकता है। हरियाली की सिमटी चादर को फैलाने हेतु समाज के हर वर्ग को आगे आकर हरित क्रांति में अपना योगदान देने की आवश्यकता है। सिर्फ वृक्षारोपण से हमारा दायित्व समाप्त नहीं होता। उसके पेड़ बनने तक उस पर बच्चों के जैसे ध्यान देने तथा देखभाल की आवश्यकता है। हर कार्य के लिए सरकार की ओर देखने से समस्या और विकट रूप ले लेती है। हमें व्यक्तिगत स्तर पर सतर्क तथा सक्षम होने की आवश्यकता है। जिससे समाज में पर्यावरण संरक्षण तथा जागरुकता बनी रहे।

पर्यावरण रिपोर्ट:

24 मई, 2016 को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण महासभा में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा एक्शन ऑन एयर क्वालिटी शीर्षक नामक जारी रिपोर्ट पर गौर करें तो विश्व में वायु की घटती गुणवत्ता के सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। रिपोर्ट की मुख्य बातें–

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार वर्ष 2008 से 2013 के बीच वैश्विक शहरी प्रदूषण का स्तर 8 प्रतिशत बढ़ा है। शहरों में रहने वाले 80 प्रतिशत से अधिक लोग जो प्रदूषण के शिकार हैं उन्हें जीवन, उत्पादकता एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
2.रिपोर्ट में खाना पकाने के ईंधन एवं स्टोव, सल्फर की मात्रा में सुधार पाया गया है। हालांकि अन्य क्षेत्रों में यह परिणाम कम प्रभावशाली रहा तथा वायु

प्रदूषण में कमी भी दर्ज नहीं की गयी।
3.स्वच्छ ईंधन तथा प्रदूषण रोकने हेतु वाहनों के लिए कड़े नियम बनाये जाने चाहिए। इससे 90 प्रतिशत तक प्रदूषण उत्सर्जन कम किया जा सकता है। विश्व के केवल 29 प्रतिशत देशों ने यूरो–4 प्रणाली को अपनाया है। बीस प्रतिशत से भी कम देशों ने अपशिष्ट जलाने से होने वाले प्रदूषण को रोकने हेतु उपाय किये हैं।
4.इसके अतिरिक्त सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें तो 97 देशों में 85 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या के पास स्वच्छ ईंधन उपलब्ध कराये जाने के प्रयास किये गये हैं।
5.अगले 15 वर्षों में बीजिंग के वायु प्रदूषण को कम करने के प्रयासों में भी सकारात्मक परिणाम देखे गये हैं। अभी भी 30 लाख से अधिक लोग स्टोव का प्रयोग कर पाने में असमर्थ हैं तथा प्रदूषित तरीकों को अपनाने में बाध्य हैं। सेशेल्स में सभी घरों में एलपीजी उपलब्ध करायी गयी।
6.केवल एक चौथाई देशों में वाहन प्रदूषण पर रोक लगाए जाने हेतु उपाय किये गये हैं ताकि प्रदूषण पर नियंत्रण लगाया जा सके। विभिन्न देशों में प्रदूषण नियंत्रण के लिए इलेक्ट्रिक कारों में बढ़ोतरी दर्ज की गई। नॉर्वे में एक तिहाई कारें इलेक्ट्रिक हैं।
7.कुछ देशों में अपशिष्ट जलाए जाने पर नियंत्रण हेतु कदम उठाये गये हैं। चुनिंदा देशों द्वारा नेशनल एयर क्वालिटी स्टैण्डर्ड भी स्थापित किए गए हैं। भारत में बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण वायु गुणवत्ता कानून एवं नियम लागू किये गये हैं। वर्ष 2005 में कोयले का उपयोग 9 मिलियन से घटकर वर्ष 2013 में 6.44 मिलियन प्रति टन पर आ गया।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण महासभा (यूएनईए) विश्व की पर्यावरण संबंधी निर्णय लेने की सर्वोच्च संस्था है। यह पर्यावरण से सम्बंधित एवं अन्य समस्याओं के लिए जिम्मेदार परिस्थितियों को नियंत्रित करने हेतु कदम उठाने के लिए भी वैश्विक आह्वान कर सकता है।

महासभा का उद्देश्य पृथ्वी पर जीवनयापन करने के लिए वातावरण को स्वच्छ बनाना एवं मानव स्वास्थ्य के प्रति बेहतर वातावरण तैयार करना है। आज पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी है कि सरकार सशक्त नियम बनाकर उनका पालन करे और कराए। कम से कम हर सरकारी कार्यालय संस्थान में पर्यावरण संरक्षण हेतु वाटर हारवेस्टिंग, सोलर एनर्जी एवं वृक्षारोपण की अनिवार्यता सुनिश्चित करते हुए इनकी जिम्मेदारी तय करे। तदोपरांत आम आदमी की भागीदारी संभव होगी। इस संदर्भ में आज हमें पर्यावरण दिवस की अपेक्षा पर्यावरण शताब्दी मनाने की आवश्यकता है। ये कदम पर्यावरण संरक्षण में एक सकारात्मक पहल होगी।

पर्यावरण संरक्षण और मीडिया:

पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। पर्यावरण में हो रहे बदलाव के कारण आम जनजीवन त्रस्त हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण और जन जागरुकता के लिए मीडिया का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। मीडिया, पर्यावरण संरक्षण और आमजन के मध्य की कड़ी है जो आमजन को जागरूक करने और पर्यावरण के खतरों के प्रति सचेत करता है।

पर्यावरण के अंतर्गत जीव–जन्तु, वनस्पति, वायु, जल, प्रकाश, ताप, मिट्टी, नदी, पहाड़ आदि सभी जैविक तथा अजैविक घटकों का समावेश है। इसमें वह सब कुछ समाविष्ट है, जो पृथ्वी पर दृश्य एवं अदृश्य रूप में विद्यमान है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा गया है– पर्यावरण में एक ओर पानी, वायु तथा भूमि और उनके मध्य अंतःसंबध विद्यमान है तो दूसरी ओर मानवीय प्राणी, अन्य जीवित प्राणी, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु एवं सम्पत्ति सम्मिलित हैं। भारत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता 321 और 300 ईसा पूर्व मध्य से देखी जा सकती है। पर्यावरण संरक्षण के लिए कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में वर्णन किया था। पर्यावरण संरक्षण में जो सबसे जरूरी घटक है जन जागरुकता यानि लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व से अवगत कराया जाना। यह तभी संभव है जब जनमाध्यम इसमें रुचि ले। आज का युग व्यावसायिक युग है बिना लाभ के आज कोई भी किसी भी प्रकार का काम नहीं करना चाहता और यही हाल आज की मीडिया का भी नजर आता है। पर्यावरण के ह्रास में कहीं न कहीं कागज उद्योग का भी योगदान है। वृक्षों की कटाई बहुत हद तक कागज की आपूर्ति के लिए होती है। जिसमें अखबार उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आता है। भारत में वृक्षों की सबसे ज्यादा कटाई अंग्रेजों के समय रेल की पटरी में लगने वाली लकड़ी के कारण हुई। उसके बाद की भारतीय सरकारों ने भी पर्यावरण को लेकर कोई खास ध्यान नहीं दिया। जिसके कई उदाहरण हमें चिपको आंदोलन आदि के रुप में मिलते हैं।

इस धरती पर अब तक न जाने कितनी ही सभ्यताएं उदित और नष्ट हुई, इसका ब्यौरा भी अभी तक मनुष्य नहीं ढूंढ पाया है। हम उन सभ्यताओं को ढूंढते–ढूंढते स्वयं भी उसी रास्ते पर चल रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रबंधन, पर्यावरणीय जागरुकता, पर्यावरण शिक्षा में व्यापक चेतना लाने में मीडिया उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। पर्यावरणीय नीतियों के निर्धारण और नियोजन में जनसामान्य की सहभागिता तभी प्रभावी हो सकती है जब उन्हें पर्यावरणीय मुद्दों की पर्याप्त सूचना एवं जानकारी समय–समय पर दी जाए। मीडिया से अपेक्षा की जाती है कि वह वैश्विक, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न होने वाली पर्यावरणीय घटनाओं, समाचारों और सूचनाओं को जनसामान्य तक इस ढंग से पहुंचाएं कि वे तथ्यों का सही विश्लेषण कर अपनी राय बना सकें। मीडिया का लक्ष्य पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से व्यक्ति को सक्षम, विवेक, व्यावहारिक–ज्ञान, कौशल प्रदान करना होना चाहिए। व्यक्ति, समाज, देश एवं राष्ट्र में पर्यावरण के प्रति न केवल जागरुकता, चेतना एवं रुचि जागृत करना होना चाहिए बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित करना भी होना चाहिए। मीडिया यदि पर्यावरणीय जागरुकता को लोगों तक पहुंचाने का लक्ष्य बना ले तो बहुत सी समस्याओं का हल संभव है।

शोध निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

- पर्यावरण में हो रहे बदलाव से तापमान में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है।
- अधिकतर पेड़ देखभाल के अभाव में सूख जाते हैं जिससे तापमान में परिवर्तन होता है।
- ज्यादातर सरकारी संस्थान पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरुक नहीं हैं।
- पर्यावरण संरक्षण और जागरुकता को लेकर मीडिया समय–समय पर जागरुकता अभियान चलाती है। जबकि इस तरह के अभियानों को लगातार चलाने की आवश्यकता है।
- मीडिया से अपेक्षा की जाती है कि वैश्विक, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर सम्पन्न होने वाली पर्यावरणीय घटनाओं, समाचारों और सूचनाओं को जनसामान्य तक पहुंचाएं ताकि वे तथ्यों का सही विश्लेषण कर अपनी राय बना सकें।
- विकास के साथ आज हमें प्रकृति से भी सहसंबंध बनाने की आवश्यकता है। जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहे।

अध्ययन की उपयोगिता:

प्रस्तुत अध्ययन 'पर्यावरण संरक्षण और मीडिया में सहसंबंध' में पर्यावरण संरक्षण और मीडिया सहसंबंध को जानने का प्रयास किया गया है। पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की उपयोगिता के साथ–साथ वर्तमान समय में भारत में पर्यावरण संरक्षण, मीडिया कवरेज, आमलोगों का पर्यावरण संरक्षण से जुड़ाव और जागरुकता को जानने के लिए इस अध्ययन को स्वरूप दिया गया है। साथ ही अध्ययन में वैश्विक स्तर के कई रिपोर्टों का भी अध्ययन किया गया है। जो यह दर्शाता है कि पर्यावरण संबंधी खबरों को मीडिया में प्रकाशन / प्रसारण के बाद भी पर्यावरण संरक्षण में न तो लोगों का ज्यादा जुड़ाव हो रहा है न ही लोग जागरुक हो रहे हैं।

सहायक संदर्भ सूची:

• Dash Dhanalaxmi, Satapathy Mahendra K., People Who Make a Change (Men and Women in Environmental Movements).
• R Rajeevan, Towards A Humane Environment Responsibilities of State, Role of Civil Society & Rights of Citizens, Gyan Books Pvt. Ltd. (Delhi, India).
• Das Arpana Dhar, Modern Environmental Ethics : A Critical Survey.
• B. Verma, Environmntal Pollution: An Introduction, Kunal Books Publishers
• चंदने, विलास, प्रकृति और मानव, दिल्लीः संदर्भ प्रकाशन, 2008, 81–88854–35–2.
• गुप्ता बंदना, नगर निगम की प्रबंधकीय व्यवस्था, वाराणसी, एक अध्ययन, पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, ISBN 81–7769–7730, 2009.
• राउत, ताज, पर्यावरण, पर्यटन, एवं लोक संस्कृति, न्यू अकेडमिक पब्लिशर्स, 2007.
• सिंह डॉ अशोक कुमार, उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, ISBN 81–8143–277–0, 2005.
• अस्थाना, डॉ. मधु, पर्यावरणः एक संक्षिप्त अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास, 2008.
• पर्यावरण तथा प्रदूषण, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, 1982.
• पर्यावरण संरक्षण में गांधी की वैकल्पिक तकनीक, आरबीएसए पब्लिशर्स, 2008, 81–76113–69–7.

रिपोर्ट:

•Joint Statement issued at the conclusion of the, 22nd BASIC Ministerial Meeting on Climate Change, New Delhi, India, 7 April 2016
• Climate change 2014: impacts, adaptation, and vulnerability-WHO
• Annual Report 2014-15, Government of India, Ministry of Environment, Forests and Climate Change.

बेवसाइट संदर्भ:

1.http://www.epa.ie/&panel1-1
2.https://en.wikipedia.org/wiki/Swachh_Bharat_Abhiyan
3.http://nmcnagpur.gov.in/
4.http://www.indiaenvironmentportal.org.in/category/10430/thesaurus/nasa/
5.http://pmindia.gov.in/en/government_tr_rec/swachh-bharat-abhiyan-2/
6.http://india.gov.in/spotlight/swachh-bharat-abhiyaan-ek-kadam-swachhata-ki-ore
7.http://cipet.gov.in/swachh.html#ad-image-22
8.https://gramener.com/swachhbharat/#?city=Varanasi
9.http://www.who.int/topics/environmental_pollution/en/
10.http://www.environmentmagazine.org
11.http://gsworldias-com
12.http://www-outlookhindi-com/country/india/who&report&on&pollution&misleading&javdekar
13.http://swachhbharaturban.gov.in/Whats_New.aspx

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org